संपादकीय....

मनुष्य के लिए धर्म अनिवार्य है। धर्म के बिना मनुष्य जीवन जी नहीं सकता, इसीलिए मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है। दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी धर्म के साथ जुड़ा हुआ है और वह धर्म के बनाएं गए नियमों पर चलता है। इसीलिए मनुष्य को धर्म के साथ जोड़ा जाता है। विश्व में ई.सा पुर्व छठी शताब्दी में अनेक देशों में धार्मिक या आध्यात्मिक आंदोलन हुए सारा विश्व उससे प्रेरित था। समग्र विश्व में सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह युग क्रांतिकारी माना जाता है। भारत देश में भी अनेक महान समाज सुधारक हुए उनमें से भगवान बुद्ध का आविर्भाव मानव इतिहास की एक असाधारण घटना है । धर्म के इतिहास में बौद्ध धर्म का अद्वितीय स्थान है। वे सम्यक् सम्बोध प्राप्ति के पश्चात् लोक कल्याण हेतु निर्बाध 45 वर्षो तक जन–जन में चारिका करते हुए जम्बूद्वीप में नाना–ग्राम निगर–निगम में जनहित के लिए लोगो को उपदेश देते रहे। लोककल्याण पूर्त्ति हेतू अपने शिष्यो को आदेश देते हुए बुद्ध कहते है कि भिक्षुओं ! अनेक जनों के हित और सुख के सम्पादन के लिए, लोक पर दया के लिए, देवता और मनुष्यों के हित और सुख साधन के लिए लोक में विचरण करो। बुद्ध और उनके शिष्यों की इसी लोककल्याण की भावना से ही बुद्धवचनका विकास एवं विस्तार हो सका। बौद्ध धर्म सांसारिक जीवन में दुख की सर्वव्यापकता को स्वीकार करता है और दुख के निर्मूलन को आदर्श मानता है। बौद्ध धर्म चेतन अचेतन द्रव्यों की नित्य सत्ता में विश्वास नहीं करता बल्कि दुख को सांसारिक जीवन का प्रधान लक्षण मानता है। बुध्द ने अपने स्वयं के अनुभव, ज्ञान से चार सत्यों को अभिव्यक्त किया है। दुख, दुख समुदय, दुखनिरोध तथा दुखनिरोध प्रतिपद्य इसे ही बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्य माना है। बुद्ध ने सर्वप्रथम अपने ज्ञान का उपदेश पूर्व परिचित पंच वर्गीय भिक्षुओं को दिया। बुद्ध ने धम्मचक्र प्रवर्तन के बाद अपने जीवन में अनेक स्थानों पर धम्म उपदेश दिए उन्हेंने अपने जीवन काल में सबसे अधिक धम्म उपदेश श्रावस्ती, राज्यगृह, वैशाली और कपिलवस्तु तथा ग्रमो–नगमो में दिए। समाज के सभी वर्गों के लोग उनसे प्रभावित हुए। उनके इस धम्म उपदेश से अनेक लोग बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गए। लोगों को उनका धर्म सद्धर्म लगा, गौतम बुद्ध ने अपने जीवन में भिक्षु–भिक्षुणी या उपासक–उपासिका को बौद्ध धम्म की दीक्षा देकर धर्म को आगे

बढ़ाने का काम किया। इतना ही नहीं बुद्ध ने अपने जीवन काल में ही भारत के श्रेष्ठ परिवारों, युवकों को भी बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। उनके समय के राजा–महाराजा बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए और उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार किया, उसमें मगधराज, बिंबिसार, सारिपुत्र, अजातशत्रु, कोसलराज प्रसेनजीत, शाक्य और गणराज्य के सदस्य, महत्वपूर्ण सेठ, विद्वान, ब्राह्मण, गणिका तथा समाज के निम्न स्तरों के व्यक्तियों ने भी बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की। बुद्ध ने अपने उपदेश में सभी संस्कार अनित्य है अतः क्षणमात्र प्रमाद न कर जीवन के लक्ष्य का संपादन करने के लिए कहा।

प्रस्तुत अंक में बुद्ध के उपदेशामृतों से समन्वित विद्वजनों के लेखों को प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हुए हम अपार हर्ष की अनुभूति कर रहे हैं। पत्रिका के समृद्ध सम्पादन में उन लेखकों व विद्वानों का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनके लेखों एवं बहुमूल्य सुझाव द्वारा यह कार्य पूर्ण किया गया। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों के सहयोग से प्रस्तुत पत्रिका का उत्तरोत्तर विकास होता रहेगा।

डॉ संघमित्रा बौद्ध